Sonam Sala
Assistant Professor (Guest Faculty)
Dept. of Geography
A.N.D. College, Shahpur Patory, Samastipur

1st Feb 2022
Tuesday

FOR B.A. – I (Hons)
Paper – I, Physical Geography

Lecture – 22

Scanned with CamScanner

UNIT-2 CONTINENTAL DRIFT THEORY OF ALFRED WEGNER

अल्फ्रेड वेगनर का महाद्वीपीय प्रवाह (विस्थापन) सिद्धांत

पृथ्वी पर महाद्वीपों एवं महासागरों की जो वर्तमान स्थिति है, ऐसी स्थिति पहले नहीं थी। शुरुआत में वे सभी पेंजिया के रूप में एकत्रित थे एवं वर्तमान में इस स्थिति में आए हैं। सर्वप्रथम एण्टोनियो स्नाइडर नामक फ्रांसीसी विद्वान ने सन् 1858 में महाद्वीपों के विस्थापित होने या प्रवाहित होने की संभावना प्रकट की। कुछ दशकों के बाद अमेरिकी वैज्ञानिक एफ० जी० टेलर ने भी सन् 1908-10 के मध्य अपने शोध पत्रों में महाद्वीपीय प्रवाह की बात कही। सर्वप्रथम अल्फ्रेड वेगनर ने व्यवस्थित रूप से जर्मन भाषा में सन् 1912 में महाद्वीपीय प्रवाह की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की।

सिद्धांतों के विकास की पृष्ठभूमि — वेगनर जलवायु विज्ञानवेत्ता थे। वह प्राचीन काल से पृथ्वी पर होने वाले जलवायु परिवर्तन की सप्रमाण एवं कालक्रम के आधार पर व्याख्या करने में लगे थे। वेगनर को कुछ स्थानों पर वनस्पति एवं पशु जगत के ऐसे जीवाश्म मिले जो इसी तरह विपरीत जलवायु से

Scanned with CamScanner

से संबंधित थे। दक्षिण अफ्रीका में महाद्वीपीय स्तर पर हिमानियों के प्रमाण, मध्य यूरोप से उत्तरी चीन तक की मैदान पट्टी में उष्ण कटिबंधीय वनों के दबने से विकसित कोयले के प्रदेश इसके कुछ प्रमाण हैं। उन्हें महाद्वीपों अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के मध्य अनेक प्रकार की सुवैतानिक संरचना जैवों की जीवाश्म आकृति की समानता जैसी समरूपता भी दिखाई दी। इन्हीं सब प्रमाणों के आधार पर उन्हें विश्वास हो गया कि —

(i) सभी महाद्वीप अति प्राचीन काल से आपस में जुड़े हुए थे।

(ii) महाद्वीपों की या तो जलवायु बदली है या वे अपनी मूल जलवायु वाले स्थानों से विस्थापित होकर वर्तमान स्थिति को प्राप्त किए हैं।

पैंजिया महाद्वीप — वेगनर का कहना है कि मध्य मेसोजोइक काल (ERA) के प्रारंभ तक सभी महाद्वीप एक विशाल स्थल खंड के रूप में एकत्रित थे। वेगनर ने इस महाद्वीप को पैंजिया कहा। पैंजिया चारों ओर विस्तृत महासागर से घिरा था जिसका नाम पैंथालसा रखा (होम्स का प्रशांत महासागर)। पैंजिया महाद्वीप के उत्तरी क्षेत्र का वह भाग जो आज उत्तरी अमेरिका का प्राचीन स्थल खंड है लॉरेंशिया कहलाया। मध्य एशिया एवं यूरोप के प्राचीन स्थलखंड को अंगारालैंड कहा गया। पैंजिया महाद्वीप के दक्षिण में टेथिस सागर (भू-अभिनति) स्थित था। शेष बचा संपूर्ण दक्षिण एशिया (अरब प्रायद्वीप से भारत तक), संपूर्ण अफ्रीका महाद्वीप, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया

अंटार्कटिका को सम्मिलित रूप से गोंडवानालैंड कहा गया। इस महान पैंजिया महाद्वीप के उत्तरवर्ती भाग से अर्थात लॉरेंशिया एवं अंगारालैंड से होकर विषुवत रेखा गुजरती थी। वेगनर द्वारा दक्षिण ध्रुव की स्थिति गोंडवानालैंड के लगभग मध्य में दक्षिण अफ्रीका में स्थित नेटाल के निकट बताई। इसी पैंजिया महाद्वीप के टूटने एवं विस्थापित होने धीरे-धीरे किंतु निरंतर बहने से कई करोड़ वर्षों में वर्तमान के महाद्वीप, महासागरों एवं नवीन या अप्पाइन पर्वतमाला का वर्तमान स्वरूप विकसित हुआ है।

Scanned with CamScanner

Date

Expt. No.

Page No. 5

पेंजिया महाद्वीप